''ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में स्वामी विवेकानंद की परिकल्पना''

स्नेह प्रताप सिंह*

ऐसा दुनिया में कभी–कभी ही होता है कि किसी ऐसे इंसान का जन्म हो, जिसके व्यक्तित्व के सामने काल, समय और अंतराल सब छोटे पड़ जाएं अपने छोटे से जीवन को भी वो कई युगों से समान महत्वपूर्ण बना दे। स्वामी विवेकानंद का जन्म कुछ ऐसी ही घटना है। विवेकानंद के जीवन (1863–1902) का इतिहास भारत की जागृति और भारतीय धर्म के पुनर्जीवन से जोड़ा जाता है। विवेकानंद स्वतन्त्रता और भारत के लोगों के उत्थान उनके पदार्थ और नैतिक उन्नति चाहते थे। उनके बयान बताते थे कि वो दो वर्गों अमीर उच्च वर्ग और गरीब निम्न वर्ग में भारतीयों को बाटा। बाद वाला हिस्सा (गरीब निम्न वर्ग) हमारे लोगों की भारी बहुमत का गठन करता है और उसे जनता के रूप में पेश करते थे। इस वर्ग के लोग गाँवों मे रहते हैं अतः विवेकानंद जी गाँवों के उत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए। इनका मानना था कि गाँवों के विकास से ही देश का विकास सम्भव है।

वर्तमान समय में दुनिया के गरीब लोग मानवीय खोजों द्वारा निर्मित समानों में उचित हिस्सेदारी की मांग कर रहे हैं, और इसके लिए वो बहुत ज्यादा समय तक इंतजार नहीं कर सकते। मौजूदा संकट से निपटने के लिए एक पूरी भावना में बदलाव की जरूरी है। जिस चीज की हमें जरूरत है वह नैतिक जागरण है। यह महान राष्ट्रीय जागरण हमारे राष्ट्रीय जीवन में ही आएगा। हमें अपने प्रत्येक नौजवान को रोजगार का अवसर प्रदान करना है, अपने देश से गरीबी को खत्म करना है, अशिक्षा को खत्म करना है। और यह सभी कुछ आम आदमी को प्रदान कराया जाना है। इस सब के बारे में स्वामी जी हमें पहले ही बता चुके हैं। विकास के सन्दर्भ में स्वामी जी का मानना था कि भौतिक विकास के साथ–साथ नैतिक विकास होना अनिवार्य है। स्वामी जी का मानना था कि हमें ग्रामीण विकास के साथ बढ़ना चाहिए तभी हम वास्तविक विकास को प्राप्त कर सकेंगे।

ग्रामीण विकास की एक तार्किक परिभाषा एक ऐसा विकास जिससे ग्रामीण आबादी को फायदा हो जहाँ विकास एक अनवरत सुधार के रूप में देखा जाता है। यह सोच हमारे पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के एक भाषण में दिखता है जब वह कहते हैं कि ''ढ़ेर सारे हमारे लोग गरीबी रेखा के नीचे रहते हैं, जो कुपोषित और प्राथमिक शिक्षा से दूर हैं। उनके सशक्तिकरण का मतलब है उन्हें गरीबी मुक्त, स्वस्थ और शिक्षित करना। यह सोच आम आदमी से नीचे रहने वाले लोगों के लिए हैं उनको ऊपर उठाने की सोच ही ग्रामीण विकास की बुनियादी अवधारणा है।''

विवेकानंद के अनुसार विकास की अवधारणा का जो मतलब है भौतिक और मानव संसाधन विकास का एक सफलता पूर्ण गठबन्धन हैं स्वामी जी का मानव संसाधन विकास से अभिप्राय गाँव के लोगों के विकास से था। गांधी जी के अनुसार भी मानव संसाधन का विकास ग्रामीण विकास एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने कहा था कि हमारा गाँव बुद्धिमान इंसान पैदा करेगा। विवेकानंद एक धार्मिक भिक्षु थे लेकिन भौतिक विकास से उन्हें किसी प्रकार का परहेज नहीं था। उनका मानना था कि भौतिक विकास किया जाना चाहिए क्योंकि इससे सभी के विकास के लिए अवसर मिलेंगे और इस लिहाज से भौतिकवाद भारत को बचाने के लिए भागे आएगा। अर्थात् विवेकानंद जी का अभिप्राय था कि विकास, भौतिक विकास और मानव संसाधन दोनों क्षेत्रों में होना चाहिए। विकास के बारे में इनका एक और महत्वपूर्ण विचार रहा है कि संपत्ति का समान वितरण हो। समाज में जाति, रंग और काम के आधार पर भेद–भाव न किया जाय।

विवेकानंद के अनुसार आर्थिक विकास बुनियादी बिंदु है। आर्थिक विकास के बाद ही सामाजिक सुधार किया जा सकता है वो साफ तौर पर कहते हैं कि मैं सुधार में विश्वास नहीं करता हूँ मैं विकास में विश्वास करता हूँ। इस विकास का अभिप्राय है भौतिक विकास और मानव संसाधन का विकास। विकास की प्रक्रिया में औद्योगिक विकास का मूल्य बेहद जरूरी है। आज विश्व के देश विदेशी पूँजी को देश में निवेश करने के लिए आमंत्रित करते हैं, जिससे देश का भौतिक और औद्योगिक विकास हो सके। स्वामी जी इस बात को 1893 में ही कह चुके थे। 29 अगस्त 1893 को सलेम इवनिंग न्यूज मैंगजीन ने लिखा कि ''विवेकानंद ने कहा कि आज धर्म में प्रशिक्षित करने के लिए मिशनरी भेजने की जगह औद्योगिक शिक्षा में प्रशिक्षण की जरूरत है।'' विवेकानंद मानते थे कि ग्रामीण विकास केवल उद्योग और औद्योगीकरण शिक्षा से आएगा। उनका कहना है कि धर्म और ईश्वर हासए के चीज हैं और औद्योगिक विकास बुनियादी चीज है इसी से राष्ट्र का विकास होगा। स्वामी जी का धर्म के सन्दर्भ में नवीन दृष्टिकोण था, वो धर्म को भी मानव विकास का साधन मानते थे। उनके अनुसार गरीब, असहाय लोगों की मदद करना ही धर्म है।

स्वामी जी शिक्षा को ग्रामीण विकास हेतु अनिवार्य मानते थे। इन्होंने कहा था कि बिना उचित शिक्षा के मानव संसाधान की अवधारणा पूरी नहीं की जा सकती। सामाजिक सुधार के लिए पहला कर्तव्य लोगों को शिक्षित करना है। अगर गरीब शिक्षा के पास नहीं आएगा तो शिक्षा को उसकी खेती फैक्ट्री और हर जगह पहुँचनी

***प्रवक्ता, राजनीति शास्त्र सी. एम. पी. डिग्री कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद**

चाहिए। उन्होंने ऐसे शिक्षा की वकालत की थी जो अच्छी संस्कृति और प्रकृति में वैज्ञानिक हो। इनका विचार था कि जनता को क्षेत्रीय भाषा में शिक्षित किया जाय जिससे कि वो सूचना भी जाए और साथ ही साथ संस्कृति को भी जाने। अपने ढ़ेर सारे पत्रों और लेखों में बताया है भारत की समस्या का समाधान केवल शिक्षा है। 1894 में मैसूर के महाराजा को लिखे पत्र में उन्होंने यही बताया है– ''पुजारियों की शक्ति और विदेशियों की जीत ने सदियों से उसे दबा दिया और आखिर में भारत की गरीब जनता यह भूल गई कि वो भी इंसान है। उन्हें विचार दिए जाने की जरूरत है। दुनिया में क्या हो रहा है इसे उन्हें बताए जाने की जरूरत है। इसके बाद खुद ही वे अपनी मुक्ति का रास्ता ढूँढ़ लेंगे प्रत्येक राष्ट्र प्रत्येक इंसान और प्रत्येक औरत को अपनी मुक्ति खुद करनी है। उन्हें विचार दीजिए केवल वही सहायता है जिसकी उन्हें जरूरत है और बाकी उन्हें प्रभाव के तौर पर पालन करना चाहिए।''

विवेकानंद समाज के एकीकरण की बात करते थे उनका विश्वास था कि बिना उचित सामाजिक एकीकरण के समाज के द्वारा ग्रामीण विकास के उत्पादन को आत्मसात नहीं किया जा सकता। वो इस बात से निश्चित थे कि जब तक विकास का फल हर नागरिक के पास नहीं पहुँच जाता तब तक विकास का कोई मूल्य नहीं है। विवेकानंद जी का मानना था कि सामाजिक एकीकरण ईश्वर की तरफ साझा लक्ष्य है जहाँ हम सभी जाति, संस्कृति और धर्म के अलग एक साथ एक ही प्रोजेक्ट में होंगे। ये समाज का एक वैश्विक और सार्वभौमिक एकीकरण चाहते थे। उन्होंने कहा था कि शिक्षा, अच्छा व्यवहार के माध्यम से हमें एक शूद्र को ब्राह्मण के स्तर तक लाना होगा जब तक समाज में इस तरह का एकीकरण नहीं किया जाएगा किसी भी विकास को प्राप्त नहीं किया जा सकता। स्वामी जी अपने सामाजिक एकीकरण विचार के माध्यम से समाज के प्रत्येक घटक को बराबर करने का प्रयास किए।

विवेकानंद के धर्म का मतलब था आध्यात्मिकता। इनके धर्म में अंध विश्वास का कोई स्थान नहीं था। विवेकानंद के धर्म की अवधारणा आम लोगों की सेवा थी, और उन्हें ऊपर उठाना था। यह स्वामी जी के ग्रामीण विकास की अवधारणा का आधार स्तम्भ था। इनके जीवन का लक्ष्य था जो गरीब हैं, हासिए पे है, बदहाल हैं, उन सभी को एक साथ लाया जाय। यही राष्ट्रीय जीवन है, सच्चा लक्ष्य है, जिसे हमारे राष्ट्रीय राजनीति को अपनाना चाहिए। विवेकानंद जी के अनुसार सच्ची राजनीति का लक्ष्य होना चाहिए सामाजिक सेवा, राष्ट्रीय जीवन की सेवा और ऊँचे कार्यों के माध्यम से समावेशी विकास।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी जी पहले धार्मिक नेता थे जो जनसाधारण के साथ तालमेल बैठाते हुए ये प्रचलित मुहावरा कहा था कि ''लोगों की

आवाज भगवान की आवाज है।'' इन्होंने ग्रामीण विकास हेतु कार्यों का दर्शन तैयार किया और बड़े पैमाने पर सामाजिक कार्य करवाए।

विवेकानंद जी को मानव संसाधन के विकास के लिए आज भी याद किया जाता है। जिस मानव संसाधन के विकास की बात स्वामी जी करते थे उसी मानव संसाधन के विकास के बारे में गांधी जी भी कहते हैं कि ''मेरे आदर्श गाँव के पास बुद्धिमान मानव होगा वह जानवरों की तरह अंधकार और गंदगी में नहीं रहेगा। पुरूष और महिला स्वतन्त्र होंगे और दुनिया में किसी के भी खिलाफ उनकी अपनी पहचान और अस्तित्व होगा।''

संदर्भ–

1. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा : विवेकानंद द हीरो प्रोफेट ऑफ द मार्डन वर्ड, पटना कालेज मैगजीन सितम्बर, 1946, पृष्ठ संख्या– 25, 26
2. वर्ल्ड फोकस मार्च 2016
3. डॉ. ए. पी. अवस्थी : भारतीय राजनीतिक विचारक प्रकाशक लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पृष्ठ संख्या 193, 197, 203
4. प्यारे लाल महात्मा गांधी ऑन ह्यूमन सेटेलमेंट्स, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद, 1977 पृष्ठ 7–8
5. विवेकानंद स्वामी : ऑन इण्डिया एण्ड हर प्राब्लम्बस, अद्वैत आश्रम, अल्मोड़ा, चतुर्थ संस्करण 1946 पृष्ठ संख्या– 75–76
6. लेक्चर्स फ्राम कोलम्बो टू अल्मोरा– पृष्ठ संख्या– 108, 123, 128
7. राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का भाषण 14 अगस्त, 2004
8. द कम्पलीट वर्क्स आफ स्वामी विवेकानंद प्रकाशक राम कृष्ण संस्थान कलकत्ता पृष्ठ सं0 77–78
9. स्वामी विवेकानंद रिपोर्ट्स इन अमेरिकन न्यूज पेपर